लॉकडाउन और बच्चों की पढ़ाई-लिखाई

केवलानन्द काण्डपाल*

इस आलेख की शुरुआत में ही अकादमिक ज़िम्मेदारी के तहत कुछ बातें स्पष्ट करना ज़रूरी है। कोरोना वायरस द्वारा जनित वैश्विक महामारी के संदर्भ में यह आलेख लिखा गया है। इस समय काल में बच्चे स्कूलों से दूर हैं, घर पर एकदम विद्यालय जैसा औपचारिक माहौल सृजित करना लगभग असंभव है। इस दौरान माता-पिता एवं अभिभावक बच्चों को समझने की कोशिश करें, उनका मार्गदर्शन करने का कौशल अर्जित कर सकें तो यह महामारी से उबरने के बाद भी उपयोगी रहेगा। मेरा, दरअसल सभी का यह विश्वास है कि विद्यालय को घर से प्रतिस्थापित भी नहीं किया जा सकता। भविष्य में बहुत जल्दी हम इस दौर से और भी मज़बूत होकर निकलेंगे और विद्यालय बच्चों की हँसी-खुशी, किलकारियों से जीवंत होंगे।

विद्यालय एक सामाजिक इकाई है, जहाँ पर सभी बच्चों को सीखने और सिखाने के लिए उपयुक्त वातावरण की अपेक्षा हम सभी लोग करते हैं। बहुत हद तक विद्यालय इस दिशा में प्रयास करते भी हैं। इसके साथ ही यह तथ्य भी सही है कि विद्यालयी प्रक्रियाओं में जाने-अनजाने कुछ चूक भी होती हैं, इनमें से दो प्रमुख हैं—

1. विद्यालयी प्रक्रियाओं में अच्छे प्रदर्शन करने वाले बच्चे या बच्चों से अपेक्षानुरूप प्रदर्शन न कर पाने वाले बच्चे या बच्चों की निरंतर तुलना की जाती है। इससे कटु प्रतिस्पर्धा एवं आक्रामकता को तरजीह मिलती है। संभवतः सचेत रूप से ऐसा न किया जाता हो, परंतु यह होता ज़रूर है।
2. कक्षा-कक्ष में और इसके बाहर भी बच्चे की सीखने की गति, तरीका, रुचियों आदि का कम ही संज्ञान लिया जाता है। यद्धपि सैद्धांतिक तौर पर सभी इस बात से सहमति जताते हैं कि विद्यालय में प्रत्येक बच्चे की सीखने की गति, तरीका और रुचियाँ अलग-अलग होती हैं। 'विविधता' प्रकृति का मानक है, हमारे विद्यालयों का मानक 'एकरूपता' दिखाई देता है। संभवतः बहुत-से व्यवस्थागत कारणों से यह होता हो, परंतु शिक्षक के अभ्यास में इसकी कमी इसका एक कारण ज़रूर है।

लॉकडाउन की इस अवधि में अपने घर पर और आस-पड़ोस में बहुत-सी बातें सुनने में आ रही हैं, जैसे— "हम घर पर एक दो बच्चों को सँभाल नहीं पा रहे, स्कूल कैसे इतने बच्चों को संभालते होंगे?" अथवा "बच्चों को घर पर चार दिन देख पाना हमारे लिए मुश्किल हो रहा है, धन्य है स्कूल, इन बच्चों की सालों-साल देखभाल करते हैं।"

**प्रधानाध्यापक*, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, पुड़कुनी, (कपकोट) जनपद-बागेश्वर, उत्तराखंड 263642

© NCERT not to be republished

माता-पिता एवं अभिभावकों की इस प्रकार की टिप्पणियों में जो प्रतिध्वनियाँ सुनाई पड़ती हैं, वह विद्यालय के प्रति उनके विश्वास को अभिव्यक्त करती हैं। बच्चों के जीवन में विद्यालय, संगी-साथी, खेल की अहम भूमिका से कोई भी इनकार नहीं कर सकता है। दुर्भाग्य से लॉकडाउन के दौरान बच्चों के लिए ये अवसर बहुत सीमित हो गए हैं, कुछ हद तक खत्म ही हो गए हैं। इसके बावजूद हम उम्मीद का दामन नहीं छोड़ सकते हैं। घर पर बच्चों के पास निम्न अवसर तो ज़रूर हैं—

- पहला—अपनी रुचि, गति और तरीके से सीखना, पढ़ना, लिखना।
- दूसरा—किसी अन्य बच्चे से तुलना न होने से, प्रतिस्पर्धा और आक्रामकता से बचे रहना।
- तीसरा—अपनी रुचि के काम के लिए समय मिल जाना। विद्यालय में सह-संज्ञानात्मक गतिविधियों में इतनी विविधता जुटाना असंभव नहीं तो कठिन ज़रूर है।
- वैश्विक कोविड-19 महामारी के दौर में बच्चों के विद्यालय जाने के अवसर बहुत हद तक सीमित हो गए हैं। ऑनलाइन टीचिंग के द्वारा इसकी भरपाई करने की बात की जा रही है। इसके अंतर्गत बच्चों को गृहकार्य दिया जा रहा है, गतिविधियाँ सुझाई जा रही हैं। यह सभी उपक्रम कक्षाई अनुभव की कमी को पूरा करने में समर्थ नहीं हैं। इस संबंध में कुछ सवाल उठने अनिवार्य हैं, जैसे—
    - यह अनुमान लगाना बहुत मुश्किल नहीं है कि हमारे सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों के कितने परिवारों के पास स्मार्ट फ़ोन, नेटवर्क सुविधा उपलब्ध है? सुदूर क्षेत्रों में नेटवर्क कनेक्टिविटी की ज़मीनी सच्चाई क्या है?
    - हमारे शिक्षकों के पास ऑनलाइन शिक्षण के लिए ज़रूरी संसाधन और कौशल की उपलब्धता की क्या स्थिति है?
    - क्या बच्चों को सीखने के अवसर मिल रहे हैं? या फिर बच्चे गृहकार्य करने के मौजूदा तौर-तरीके अपना रहे हैं, यह बच्चों में ऊब-नीरसता, तनाव एवं दुश्चिंता की सृजना तो नहीं कर रहा है?
    - घर पर बच्चों को सतत रूप से सीखने के लिए किस तरह से प्रेरित किया जा सकता है? इस मामले में घर पर माता-पिता, अभिभावक अपनी ज़िम्मेदारी का निर्वहन कैसे करें?

बच्चे अधिक समय से विद्यालय नहीं जा पाए हैं। संभवतः शहरी क्षेत्रों के बच्चों को तो घर से बाहर निकलने के अवसर भी न मिल रहे हों। ऐसे में बच्चों का तनावग्रस्त होना, दुश्चिंता बढ़ना, अवसादग्रस्त होना स्वाभाविक ही है। उस पर लगातार गृहकार्य करने का दवाब बच्चों को चिड़चिड़ा बना रहा है। यहाँ पर उल्लेखनीय है कि ऑनलाइन टीचिंग के अति उत्साह में बहुत सारा गृहकार्य देकर बच्चों को अकादमिक रूप से व्यस्त रखने का उपक्रम चल ही रहा है। ऐसे में माता-पिता, अभिभावक की ज़िम्मेदारी महत्वपूर्ण हो जाती है। यह दो स्तरों पर साफ़-साफ़ नज़र आती है—

1. बच्चों को तनाव, अवसाद और दुश्चिंता से किस प्रकार से दूर रखा जाए?

© NCERT not to be republished

2. बच्चों को पढ़ने-लिखने के लिए किस प्रकार से प्रेरित किया जाए?

लॉकडाउन के दौरान घर पर एवं आस-पड़ोस के बच्चों के साथ काम करने और अवलोकन से प्राप्त अंतर्दृष्टि के आलोक में माता-पिता, अभिभावकों की ज़िम्मेदारी को समझाने की कोशिश इस आलेख में की गई है।

बच्चों को तनाव, अवसाद और दुश्चिंता से दूर रखना

लगातार एक जगह बने रहना बच्चों के लिए असहजता उत्पन्न करता है, दुश्चिंता एवं तनाव को बढ़ाता है। इस तनाव एवं दुश्चिंता को कब, कहाँ और किस प्रकार से अभिव्यक्त करना है, इस मामले में बच्चों की समझ एक तरह से अपरिपक्व ही होती है (दरअसल हम में से बहुत-से वयस्कों की समझ भी कहाँ बेहतर होती है?)। बच्चों के कुछ विशेष व्यवहार नज़र आ रहे हैं, जैसे— चिड़चिड़ा हो जाना, झुंझलाहट, ज़िद, बातों का अनसुना कर देना, निर्देश न मानना। प्रायः माता-पिता या अभिभावक इन व्यवहारों को अनुशासनहीनता, अवज्ञा के रूप में देखते हैं (वैसे भी हम लोग बच्चों को आज्ञापालक के रूप में देखने के आदी हैं, अभिमुखीकृत हैं)। माता-पिता एवं अभिभावकों की कुछ विशेष किस्म की टिप्पणियों से इसका अंदाज़ा लगाया जा सकता है— "घर पर हो ना इसलिए ज़िद कर रहे हो, स्कूल में होते पता चलता", "बहुत दिन से स्कूल नहीं गए ना, इसलिए तुम्हारे नखरे बढ़ गए हैं", "पढ़ते हो कि नहीं, तुम्हारी मैडम को फ़ोन करूँ", "हे भगवान्, इससे तो अच्छा था स्कूल ही खुल जाते", इस प्रकार की और इससे मिलती-जुलती बातें बच्चों को सुनने को मिल रही हैं। बच्चे इस प्रकार का व्यवहार क्यों कर रहे हैं? इसकी तह में जाने की कोशिश नहीं हो रही है और बहुत-से माता-पिता इस तरह देखने का नज़रिया भी नहीं रखते हैं। दरअसल बच्चों में इस प्रकार के विशेषीकृत व्यवहार की पृष्ठभूमि में तनाव, अवसाद एवं दुश्चिंताएँ हैं, इन्हें जानने-समझने की ज़रूरत है। इसका एक अनुभव लेखक को अपने ही परिवार में छोटे बच्चों के साथ काम करते हुए हुआ। 13 वर्ष की बच्ची, जिसको अब 9वीं कक्षा में जाना है, उसकी स्वाभाविक रुचि पेंटिंग में है, उसे चटख रंग पसंद हैं, विशेषकर गुलाबी, हरा, नीला, पीला आदि। लॉकडाउन से पहले उसकी पेंटिंग में इन्हीं रंगों की बहुलता दिखाई देती है। कुछ दिनों से यह बच्ची उदास थी। इस स्थिति से बाहर निकलने के लिए लेखक ने उसे उसकी पसंद का कोई भी चित्र बनाने और उस पर रंग भरने के लिए प्रोत्साहित किया।

बच्ची द्वारा बनाए गए चित्र का विश्लेषण करने पर पाया गया कि उसने चित्र में अवसाद, निराशा और दुश्चिंता को बहुत हद तक अभिव्यक्त किया। बच्ची से बात करने पर उसकी निराशा उभरकर सामने आ गई। दरअसल वह समाचार मीडिया और सोशल मीडिया में बताई जा रही बढ़ती हुई मौतों की संख्या से आहत थी। शुक्र है कि समय रहते यह तथ्य सामने आ गया, वरना बच्ची अवसाद को कब तक सहती और इसका उसके भावनात्मक विकास पर कितना बुरा असर पड़ता। बच्ची से निरंतर संवाद करके, उसे इससे बाहर लाने में बहुत हद तक सफलता मिली। लॉकडाउन के दौरान बच्चों को तनाव, अवसाद और दुश्चिंता से बचाने के लिए माता-पिता एवं अभिभावकों को सजग रहने की ज़रूरत है। इस संबंध में निम्न कदम उठाए जा सकते हैं—

© NCERT not to be republished

1. विश्व में और भारत में कोरोना के कारण हो रही मौतों की लगातार चर्चा करने से बचा जाना चाहिए, विशेषकर बच्चों के सामने इस प्रकार की चर्चा न की जाए। इसके बजाए इससे बचाव के कौशल पर बातचीत की जाए। यहाँ पर बच्चों को यथार्थ से दूर रखने का मंतव्य नहीं है, परंतु यथार्थ की विभीषिका से तो बच्चों को दूर रखना ज़रूरी है, बच्चों के नाज़ुक मनोभावों पर इसका दीर्घकालिक नकारात्मक असर पढ़ सकता है। इन बातों के अलावा भी बहुत सारे ऐसे विषय हैं जिन पर बच्चों से संवाद किया जा सकता है।
2. आजकल टेलीविज़न, मीडिया और सोशल मीडिया भी कोरोना और उससे हुई मौतों की खबर से अटा पड़ा है। दिन भर एक ही तरह की खबरें अलग-अलग तरीके से परोसी जा रही हैं। घर के वयस्क दिन भर इस तरह की खबरों से बावस्ता हैं तो बच्चे इसका संज्ञान नहीं लेंगे, यह मानना अनुचित है। जहाँ तक संभव हो ऐसी खबरों से बचा जाए, विश्वसनीय स्रोतों का उपयोग किया जाए और बच्चों की आयु का ध्यान रखते हुए एक सीमा तक ही उनसे साझा किया जाए। हम वयस्क इस गफलत में न रहें कि इन खबरों से बच्चों को कोई मतलब नहीं रहता है। हमारे घर में नौ वर्षीय बच्चा एक दिन कक्ष में आकर पूछता है, "ताऊ जी, जब इतने लोग मर रहे हैं तो भगवान कुछ करते क्यों नहीं हैं"। स्पष्ट है कि यह बच्चा लगातार इस तरह की खबर सुनकर आहत है, इस बच्चे की समाचार सुनने में कोई रुचि नहीं है। दिन भर इस तरह की खबरों की बाढ़ की चपेट में यह बच्चा भी आ गया है। अब हमने समाचार सुनने का समय सीमित कर दिया है और बहुत सारे अविश्वसनीय चैनल म्यूट कर दिए हैं।
3. घर पर, विद्यालय की तरह लगातार अनुशासन की समय-सारणी में बच्चों को बाँधने की कोशिश कुछ माता-पिता कर रहे हैं, यह बिलकुल भी उचित नहीं है। एक तो घर विद्यालय नहीं है और ऐसा बनाने की कोशिश भी अनुचित है और दूसरा विद्यालय अनुशासन के चाहे जितने भी दावे करे (वस्तुतः यह दावा करना ही गलत है) बच्चे अपनी मनमर्ज़ी के काम करने के अवसर निकाल ही लेते हैं, यह एक सच्चाई है और इसमें कुछ गलत भी नहीं है। घर पर बच्चे एक तो अपने संगी-साथियों से दूर हैं और उन्हें अपने मनपसंद काम करने के मौके भी न मिलें तो यह बच्चों के प्रति अन्याय होगा। दिन भर के समय का कुछ हिस्सा बच्चों को ऐसा ज़रूर दिया जाना चाहिए जो हमारे अनुशासन की सीमा से बाहर हो, हमारी सख्त निगरानी से मुक्त हो। यदि संभव है तो हम वयस्क भी इस समय उनके खेल का हिस्सा बन जाएँ (इसमें समय लगेगा, वयस्क से बच्चा बन जाना बहुत आसान भी नहीं है)। बच्चों का विश्वास जीत पाना बहुत संवेदनशीलता की माँग करता है, ऐसी कोशिश की जानी चाहिए। हमारी यह कोशिश लॉकडाउन के बाद भी अपना असर दिखाएगी।
4. किशोर उम्र के बच्चे शारीरिक परिवर्तन के दौर से गुज़र रहे होते हैं, असीम ऊर्जा एवं उत्साह से सराबोर किशोर बच्चे अपनी अस्मिता एवं पहचान के लिए जूझ रहे होते हैं। यह भावनात्मक रूप से बहुत संवेदनशील विषय है। इन्हें, अपने हम उम्र बच्चों के साथ दोस्ती अपनी अस्मिता

© NCERT not to be republished

को स्थापित करने के लिए बहुत आवश्यक महसूस होती है। इस दौर में किशोर बच्चों को समझने की कोशिश करें, उनके मन को टटोलें, उनकी शारीरिक एवं मानसिक संक्रमण काल की चुनौतियों के प्रति संवेदनशील रहें। इस उम्र में बच्चे ज़िम्मेदारी उठाना चाहते हैं, बातों को तार्किकता की कसौटी पर स्वीकारते हैं। अतः घर-गृहस्थी के बारे में निर्णय लेते समय उनके विचारों को समुचित स्थान दें, कोई भी नियम निर्धारित करते समय उसका तार्किक आधार प्रस्तुत करें। किशोर अब बच्चे नहीं हैं, वयस्क बनने की प्रक्रिया में हैं, इसलिए उन्हें मित्रवत स्वीकारें। इन सभी के बावजूद किशोरों को अपने हमउम्र दोस्तों की ज़रूरत होगी। फ़ोन, सोशल मीडिया के माध्यम से उन्हें अपने मित्रों से बातचीत के अवसर दें। इस दौरान एक जासूस की तरह निगरानी करने के बजाय सुपरविज़न करें। किशोरों की निजता का सम्मान करें। इस निजता की सीमा एवं नियमों को तार्किक आधार पर लागू करने की कोशिश करें, न कि सत्तात्मक आधार पर। इस दौरान किशोरों से संवाद और विश्वसनीय आधार पर बने मज़बूत संबंध भविष्य में लॉकडाउन के बाद भी काम आएँगे।

5. किशोर एवं बच्चों में अवसाद, तनाव एवं दुश्चिंता के संकेतों को समझें और यथा समय इस स्थिति से उबरने में उनकी मदद करें, हस्तक्षेप करें, उनसे भावनात्मक रूप से जुड़ें, संवाद करें। बच्चे से अपनी भावनाओं को सही समय पर, सही तरीके से व्यक्त करने के तरीकों पर बातचीत करें। बच्चों एवं किशोरों के जिस व्यवहार को हम बतौर अनुशासनहीनता देख रहे हैं, संभव है इसकी पृष्ठभूमि में कोई भावनात्मक द्वंद्व हो। अतः उनके साथ संवेदना बरतने की ज़रूरत है।

पढ़ने-लिखने के लिए प्रेरित करना

बच्चों के लिए पढ़ना वह भी लॉकडाउन की स्थितियों में नीरस काम हो जाता है, विशेषकर तब जबकि यह पढ़ना उनके लिए अर्थपूर्ण न हो। बच्चों के लिए सीखना हमेशा रुचिपूर्ण होता है। पढ़ने और सीखने में सारभूत अंतर है। किशोरवय के बच्चे जो तर्कसंगत आधार पर विचारने के स्तर पर हैं, उनके लिए तो इस तरह की पढ़ाई का कोई तर्कसंगत आधार नज़र नहीं आता। ऑनलाइन (सोशल मीडिया—व्हाट्सएप आदि) शिक्षण के नाम पर बच्चों को बहुत सारा गृहकार्य दिया जा रहा है। बच्चे भी इसी माध्यम का उपयोग करते हुए दिन-रात इसे निपटाने में जुटे हुए हैं, अपने कार्य को साझा कर रहे हैं, दूसरों से लेकर अपनी उत्तर पुस्तिका में उतार रहे हैं। बच्चे व्यस्त नज़र आ रहे हैं, परंतु यह व्यस्तता बच्चों के लिए अर्थपूर्ण नहीं है, छोटे बच्चे तो गृहकार्य को किसी भी तरह से जल्दी-जल्दी निबटाकर राहत की साँस लेते प्रतीत होते हैं, परंतु किशोरवय के बच्चे उकताहट एवं तनाव महसूस कर रहे हैं और बहुत बार यह उनके व्यवहार में नज़र भी आ रहा है। माता-पिता और अभिभावकों के समक्ष यह एक गंभीर चुनौती पेश कर रहा है कि लॉकडाउन की स्थिति में घर पर बच्चों एवं किशोरों को किस प्रकार से पढ़ने-लिखने के लिए प्रेरित किया जाए? घर पर एवं आस-पड़ोस के बच्चों के साथ काम करने और अभिभावकों से बातचीत से प्राप्त अंतर्दृष्टि के आलोक में इस संदर्भ में कुछ व्यावहारिक सुझाव निम्नवत दिए जा सकते हैं—

© NCERT not to be republished

1. बच्चों के लिखने में व्यस्त रहने और सीखने में सारभूत अंतर है। यह स्पष्ट नज़र आ रहा है कि बच्चों को उनके विद्यालय या शिक्षकों द्वारा बहुत सारा गृहकार्य दिया जा रहा है। कुछ अध्यापक तो प्रश्नों के साथ-साथ प्रश्नों के उत्तर भी भेज रहे हैं और बच्चे उसे अपनी अभ्यास पुस्तिका में उतारने में अति व्यस्त हैं। इन दिनों बच्चे प्रातःकाल उठकर अपने फ़ोन पर सबसे पहले यही देख रहे हैं कि आज उन्हें किस विषय में कितना काम मिला है? गृहकार्य की अधिकता बच्चों की बेचैनी बढ़ा रही है। पाठ पर चर्चा किए बिना पाठ के प्रश्नों का हल लिख देने मात्र से बच्चे कितना सीख पा रहे हैं? कितना समझ पा रहे हैं? इसका संज्ञान नहीं लिया जा रहा है। यह अवसर था कि बच्चों की रुचि, सीखने की गति और सीखने के तरीके के आधार पर बच्चों को गृहकार्य दिया जा सकता था, परंतु इसकी उपेक्षा की जा रही है। सभी बच्चों को एक ही तरीके का गृहकार्य दिया जा रहा है। इस बारे में जहाँ तक संभव है माता-पिता और अभिभावकों को विद्यालय या शिक्षक से बात करने की ज़रूरत है, गृहकार्य की अधिकता, औचित्य पर शिक्षकों से संवाद किया जाना चाहिए। यदि माता-पिता और अभिभावक सक्षम हैं तो बच्चों को विषय अथवा पाठ समझने में मदद कर सकते हैं। इससे बच्चों को प्रश्नों को हल करने और नोट्स बनाने में आसानी होगी। माता-पिता या अभिभावक भी सभी विषयों में सहायता नहीं कर सकेंगे, उनकी भी विषयगत सीमा हो सकती है।
2. बच्चों को अति व्यस्त रखने के कुछ अन्य उपक्रम भी सामने आ रहे हैं। इस अवधि के एक अनुभव को शेयर करना ज़रूरी है, इससे अधिक स्पष्टता आएगी। हमारे घर से और आस-पड़ोस से बच्चे स्थानीय प्राइवेट स्कूल में नामांकित हैं। इन बच्चों को पहले कहा गया कि पतली (कम पेज वाली) कॉपी में अपना काम करें। बच्चों ने निर्देशानुसार ऐसा ही किया, कुछ दिनों बाद शिक्षकों का निर्देश आया कि अब इसे मोटी कॉपी (अधिक पेज वाली) कॉपी में दुबारा लिखें। इससे बच्चे (अधिकतर किशोर) दुश्चिंता में पड़ गए, लेखक ने बच्चों के सामने प्रस्ताव रखा कि इस बारे में शिक्षकों से बात की जाए, बच्चे भयभीत थे कि शिक्षक उन्हें डाँट लगाएँगे, नाराज़ हो जाएँगे। इसके बावजूद लेखक ने पहल करते हुए शिक्षकों से इसके औचित्य पर बात की तथा इस बात के लिए राज़ी किया कि बच्चे पहले किए गए काम को दुबारा से नहीं करेंगे, यह उपक्रम बच्चों में दुश्चिंता एवं तनाव पैदा कर रहा है। इस तरह के प्रयास से यह मामला हल हो गया और बच्चों को कुछ हद तक तनाव से राहत मिली। यहाँ इस अनुभव को साझा करने का प्रयोजन यह है कि हमें इस मामले में सतर्क या सजग रहने की ज़रूरत है कि बच्चों को जो भी कार्य या गृहकार्य दिया जा रहा है, उसका प्रयोजन क्या है? औचित्य क्या है? बच्चों की व्यस्तता और पढ़ाई में अंतर है, बच्चों को व्यस्त रखने के लिए दिया गया कार्य और सीखने में मदद करने वाले कार्य में भेद को समझने की ज़रूरत है। इस बारे में बच्चों के शिक्षकों और विद्यालय से निरंतर संवाद में रहना भी बहुत ज़रूरी है।

बच्चे मोबाइल फ़ोन का इस्तेमाल किस तरह से कर रहे हैं? सीखने-समझने के लिए इंटरनेट से सामग्री किस तरह से तलाश रहे हैं? कौन-सी साइट का इस्तेमाल कर रहे हैं? इसकी

© NCERT not to be republished

सतत मॉनिटरिंग की ज़रूरत है। हाल ही में सुनने में आया है कि किशोरवय के बच्चे अश्लील साइट का इस्तेमाल करते पकड़े गए, कम उम्र के बच्चे कार्टून चैनेल की खोजबीन करने की कोशिश कर रहे हैं। माता-पिता या अभिभावकों के लिए ऐसे में ज़रूरी हो जाता है कि बच्चों से कार्य या गृहकार्य के बारे में लगातार संवाद किया जाए, इंटरनेट से सामग्री ढूँढ़ने में मदद की जाए। गैर-ज़रूरी साइट के नुकसान के बारे में किशोरों से संवाद किया जाए, तथ्यों को तार्किक आधार पर रखा जाए। उनकी यौन जिज्ञासाओं को संबोधित किया जाए। यह काम चुनौतीपूर्ण ज़रूर है, परंतु यह पहल ज़रूरी है। इसके अभाव में बच्चों (विशेषकर किशोरों) के मार्ग विचलित होने की संभावनाएँ प्रबल होती जाएँगी।

3. बच्चों के प्रयास की प्रशंसा कीजिए। उनके प्रयास में क्या बेहतर था इसका वर्णनात्मक फ़ीडबैक दीजिए। यह बच्चों को समझने में मदद करेगा कि उनका कौन-सा काम बेहतर हो पाया है और कहाँ बेहतर करने की गुंजाइश है। बच्चों को होशियार, बुद्धू, औसत कहकर की गई प्रशंसा उनकी बहुत मदद नहीं कर पाएगी। बच्चों को श्रेणीकरण एवं तुलना से बचाने का बेहतर अवसर हमारे पास है। इसका एक बहुत ही आश्चर्यजनक अनुभव लेखक को हुआ है। जिन माता-पिता ने बच्चों की प्रशंसा की और उन्हें होशियार, स्मार्ट, इंटेलीजेंट कहते हुए फ़ीडबैक दिए, वे बच्चे आगे काम जारी रखने को अनिच्छुक दिखाई दिए। इन बच्चों से बातचीत से पता चला कि आगे वह अच्छा काम नहीं कर सके तो उन्हें होशियार, स्मार्ट, इंटेलीजेंट नहीं कहा जाएगा, उनके सोशल टाइटल (टैग) उनसे वापस ले लिए जाएँगे, इस भय से ये बच्चे आगे की चुनौती स्वीकार नहीं कर रहे हैं। इतना ही नहीं, ये ही बच्चे अधिक तनाव एवं दुश्चिंता में दिखाई दे रहे थे। इस अनुभव से सबक लेकर लेखक ने घर पर और आस-पड़ोस के कुछ बच्चों के प्रयास की प्रशंसा करने तथा क्या अच्छा किया? और कहाँ और बेहतर करने की गुंजाइश है? के आधार पर विस्तृत फ़ीडबैक देने की कोशिश की। इसके बहुत ही सकारात्मक परिणाम नज़र आ रहे हैं। ये बच्चे आगे की चुनौती स्वीकारने के लिए सहर्ष उद्दत दिखलाई दिए, इन बच्चों में असफलता का भय कम नज़र आया। सबसे आश्चर्यजनक बात यह नज़र आई कि इन बच्चों में दुश्चिंता एवं तनाव का स्तर भी कम नज़र आया। किशोरवय के बच्चों में यह तथ्य अधिक स्पष्टता से सामने आया। इस अनुभव का सबक यह है कि बच्चों के प्रयास की प्रशंसा की जाए न कि बच्चे की। इस तरह से बच्चों को फ़ीडबैक देने से उन्हें लम्बे समय तक पढ़ने-लिखने के लिए अभिप्रेरित किया जा सकता है। किसी भी प्रयास को जारी रखने में अभिप्रेरण और अभिप्रेरण के तरीके की अहम भूमिका है, हम माता-पिता और अभिभावकों को इस मामले में सजग एवं कुशल होने की ज़रूरत है।

4. कम उम्र के छोटे बच्चों में कार्टून फ़िल्म देखने की प्रवृत्ति दीवानगी की हद तक होती है। लॉकडाउन अवधि में अधिकांश माता-पिता व अभिभावकों के सामने यह चुनौती आ रही है कि बच्चों की इस लत को कैसे दूर किया जाए? इस मामले में हमें कुछ बातों का विशेष ध्यान रखने की ज़रूरत है, मसलन ऐसे कार्टून फ़िल्म देखने से बचा जाए जो बच्चों में हिंसा के प्रति उत्सुकता जगाते हैं। ऐसे बहुत सारे

© NCERT not to be republished

कार्टून या कार्टून फ़िल्में हैं जो परिस्थितिजन्य हास्य पैदा करती हैं, उदाहरण के लिए, *टॉम एंड जैरी*। *टॉम एंड जैरी* के लगातार द्वंद्व में रहने, लड़ाई-झगड़े के बावजूद हिंसा का भाव मन में नहीं उभरता, बल्कि हास्य पैदा होता है। बच्चे की कार्टून देखने की गतिविधि को पढ़ाई-लिखाई से जोड़ा जा सकता है। यह तरीका लेखक ने आज़मा कर देखा और उसे बहुत ही कारगर महसूस हुआ। घर पर नौ वर्ष का बच्चा '*हनी और बनी*' कार्टून फ़िल्मों का दीवाना है। गृहकार्य या कार्य जल्दी-जल्दी निबटाकर कार्टून फ़िल्म या सीरियल '*हनी और बनी*' देखने का समय निकाल लेता है, उसे इससे रोकने का कोई ठोस तार्किक आधार भी हमारे पास नहीं था। इसके लिए एक विशेष रणनीति अपनाई गई। दरअसल, लेखक ने इस बच्चे को कार्टून फ़िल्म या सीरियल '*हनी और बनी*' देखने से रोका नहीं, परंतु फ़िल्म देखने के साथ-साथ कुछ टास्क निर्धारित कर दिए, जैसे— कार्टून फ़िल्म या सीरियल देखने के बाद उस कहानी को सुनाएगा, बाद में इसे लिखने का काम भी जोड़ दिया, क्रमशः इसमें कार्टून फ़िल्म या सीरियल के पात्रों के चित्र बनाना, किसी सीरियल की कहानी लिखना, किसी पात्र के रूप में स्वयं को रखकर डायलाग लिखना इसमें जुड़ता जा रहा है। आजकल इस सीरियल के पात्रों के लिए मासिक टेस्ट पेपर तैयार हो रहे हैं। बच्चा अभी कक्षा 4 में नामांकित होना है तो कार्टून के सभी पात्र कक्षा 3 में हैं। सबसे मज़ेदार बात प्रत्येक पात्र के लिए यह है कि अलग-अलग स्तर के प्रश्न पत्र इस बच्चे ने बनाए हैं। प्रत्येक बच्चे का मूल्यांकन एक सामान प्रश्न पत्र नहीं हो सकते। बच्चा इस समझ को साफ़-साफ़ अभिव्यक्त कर रहा है, हमें इसे आत्मसात करने में न जाने कितना समय लगेगा। बच्चे से बातचीत करने पर पता लगा कि उसके प्रिय कार्टून-सीरियल का पात्र 'हनी' मूर्ख समझा जाता है, सो उसके लिए आसान सवाल है।

5. बच्चों की पढ़ाई-लिखाई में मदद करने में वे माता-पिता या अभिभावक ही मदद करने की स्थिति में हैं, जिन्हें पढ़ने-लिखने के अवसर मिले हैं, परंतु अभी भी ऐसे बहुत-से अभिभावक हैं जिन्हें पढ़ने-लिखने के अवसर नहीं मिल पाए हैं, उनके सामने चुनौती है कि वे बच्चों की पढ़ाई-लिखाई में किस प्रकार से मदद कर सकते हैं? यह वास्तव में एक गंभीर चुनौती है। इसी संदर्भ में एक बार उत्तराखंड के सचिव महोदय द्वारा एक औपचारिक बैठक में सुनाया गया वाक्य याद आता है, जो इस मामले में हमें महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि दे सकता है। सचिव महोदय का कहना था जब हम भाई-बहन विद्यालयों में अध्ययनरत थे तो उनकी माताजी ने पढ़ने-लिखने के बारे में एक नियम बनाया था कि हम बच्चे दो घंटा पढ़ाई करेंगे, इसके बाद जो पढ़ा है उसको एक घंटे माताजी को सुनाएँगे। यह क्रम उनकी स्कूली शिक्षा पूरी होने तक चलता रहा। बाद में पता चला कि माताजी तो स्कूल गई ही नहीं। बाद के वर्षों में उन्होंने माताजी से पूछा कि आपको कैसे पता चलता था कि हम वास्तव में पढ़ाई कर रहे हैं। इस बारे में उनकी माताजी का कहना था— 'दो घंटे यदि ध्यान से पढ़ा जाए तो हमें इतना तो सीख ही जाना चाहिए कि इस बारे में हम एक घंटा बात कर सकें।' इस कथन के गहन निहितार्थ हैं। हम सभी माता-पिता या अभिभावक यदि यही नज़रिया रखें तो अपने पढ़े-लिखे न होने की बावजूद बच्चों की मदद कर सकते हैं। उन्होंने क्या

पढ़ा-लिखा है, इसे देखें, यदि यह संभव नहीं है तो बच्चों से मौखिक रूप से बताने को कहें। बच्चों की दिनचर्या की मोटा-माटी समय सारणी बनाएँ, बच्चों के लिए प्रतिदिन के लक्ष्य निर्धारित करें। इसके दोहरे लाभ संभावित हैं। एक तो बच्चे से आपका जुड़ाव बढ़ेगा और दूसरा आपका यह जुड़ाव बच्चे को चुनौतियों का सामना करने में मददगार होगा। वस्तुतः बच्चे (किशोर भी) इस बात से प्रोत्साहित होते हैं कि उनकी सीखने की प्रगति में कोई रुचि ले रहा है और यह माता-पिता हैं तो और भी अच्छा है। बच्चे इस बात की कम ही परवाह करते हैं कि मेरी बात सुनने वाला व्यक्ति पढ़ा-लिखा है या कम पढ़ा लिखा है।

पढ़ाई-लिखाई के अतिरिक्त अन्य कार्यों के लिए अवसर

विद्यालय में जिसे सह-संज्ञानात्मक गतिविधियाँ कहा जाता रहा है, घर पर भी इस तरह की बहुत सारी गतिविधियों के लिए अवसर निकाले जा सकते हैं। घर के कामों में हाथ बटाना, घर की सजावट, बच्चों का ड्रीम-कॉर्नर, गार्डनिंग, खाना-बनाना, कोई खास किस्म की रेसीपी बनाना आदि। इन गतिविधियों को जेंडर के आधार पर विभाजित करने से बचें। आप देखेंगे कि कामों का जेंडर के आधार पर हमने जो बँटवारा किया है, बच्चे प्रायः इस दृष्टि से नहीं देखते हैं। लॉकडाउन अवधि का उपयोग बच्चों में कलात्मक, सौंदर्यात्मक, समानता के मूल्यों के बीजारोपण के लिए किया जा सकता है। घर के कामों में हाथ बटाने से न केवल कुछ विशेष कौशल विकसित होंगे, वरन् कर्म के प्रति सम्मान का मूल्य भी बीजारोपित होगा। बच्चे विषम परिस्थिति में भी कोई न कोई हल ढूँढ ही लेते हैं। लॉकडाउन अवधि में हमारे मोहल्ले के बच्चों ने जन्मदिन को मनाया और इंटरनेट से केक बनाने की विधि सीखकर शानदार और स्वादिष्ट केक बनाया। मदर डे पर इसकी पुनरावृति भी हो गई। कुछ बच्चियाँ महिलाओं से यानी बालिकाओं से सिलाई-कढ़ाई सीख रही हैं, पेंटिंग बना रही हैं, जन्मदिन शुभकामना कार्ड बन रहे हैं, घर पर समोसे, गोल-गप्पे और भी चटपटे व्यंजन बन रहे हैं, संतोषजनक बात है कि बालक-बालिकाएँ मिलकर यह सब कर रहे हैं। यह सब हो रहा है, सहयोगात्मक आधार पर, किसी प्रकार की प्रतिस्पर्धा नहीं है। यह रेखांकित करने वाली बात है। वस्तुतः बच्चे प्रतिस्पर्धा के लिए डिज़ाइन नहीं होते, वह तो हम, हमारी शिक्षा प्रक्रियाएँ बच्चों को इस साँचे में ढालने का काम करती हैं और यह सब माता-पिता या अभिभावकों की मूक सहमति से ही होता है। यहाँ पर मुख्य रूप से कहना यह है कि बच्चों को उनकी अभिरुचि के काम करने और उसमें कुशलता प्राप्त करने के मौके जुटाएँ। कौन जाने यही अभिरुचि बच्चे के आगामी जीवन को कोई सार्थक दिशा दे। बच्चों से स्वच्छता के नियमों, सामाजिक दूरी, भौतिक दूरी के तौर-तरीकों पर बातचीत करें तथा उनके समक्ष आदर्श प्रस्तुत करें। न केवल आगे भविष्य में वरन् जीवनभर इन कौशल की आवश्यकता होगी।

निष्कर्ष में हम कह सकते हैं कि लॉकडाउन एक अनपेक्षित स्थिति है, इस समयकाल में हम वयस्कों को न केवल स्वयं का बचाव करना है, वरन् बच्चों के लिए भी सुरक्षित परिवेश उपलब्ध कराना है। बच्चों के पढ़ने-लिखने के अवसरों को भी जारी रखने की चुनौती हमारे सामने है। इसका सामना करने के लिए

© NCERT not to be republished

सुझाए गए उपाय मात्र उपदेशात्मक नहीं हैं, वरन् इन्हें व्यवहार में अपनाया जा सकता है। यदि हम ऐसा कर सकें तो इसके लाभ दूरगामी होंगे। प्रसिद्ध लोक व्यवहार विशेषज्ञ डेल कार्नेगी (1948) ने लिखा है कि, "यदि किस्मत आपको खट्टे नींबू दे तो आप इसका बेहतरीन शरबत बनाकर पी जाएँ।" सत्य तो यह है कि हम व्यस्क भी इस स्थिति में बहुत सहज नहीं हैं। हमारी यह असहजता बहुत बार बच्चों को चिंतित कर रही है। अतः हम वयस्कों की अहम ज़िम्मेदारी है कि बच्चों को इस असहज बोध से दूर रखें। विषम परिस्थिति में भी सकारात्मकता को न छोड़ें और बच्चों को भी इसके लिए प्रेरित करें।

संदर्भ

कार्नेगी, डेल. 1948. हाऊ टु स्टॉप वरिंग एंड स्टार्ट लिविंग. *इफ़ यू हैव ए लेमन, मेक ए लेमोनाड.* सिमोन एंड चस्टर, दि ग्रेट ब्रिटेन.

© NCERT not to be republished